दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य

बड़े आश्चर्य की बात है कि दीपावली का त्योहार भारत में बहुत ही महत्वपूर्ण त्योहार माना जाता है। इसे हम सभी भारतवासी हर वर्ष बड़े ही धूमधाम से मनाते आये हैं। लेकिन हर वर्ष त्योहार मनाते हुए भी हम जिस बात की कामना रखते हैं कि हमारे घरों में लक्ष्मी आयेगी, इसलिए हम लोग अपने घरों की सफाई करते, दीपक जलाते तथा पूजन कर लक्ष्मी का आह्वान करते, परंतु इतना नहीं समझते कि एक तरफ लक्ष्मी के वाहन उल्लू को भी दिखाते हैं और दूसरी तरफ दीपक जलाकर लक्ष्मी का आह्वान करते हैं। विचार करने की बात है कि जब उल्लू को रोशनी में कुछ दिखाई ही नहीं देता तो लक्ष्मी आयेगी कैसे! वह तो हमारे से दूर भाग जायेगी।

तो आइये, हम इसका आध्यात्मिक रहस्य समझते हैं। अब परमपिता परमात्मा शिव आकर हम सभी को दीपावली का सच्चा-सच्चा रहस्य समझाते हैं कि हे वत्सों! तुम द्वापर से लेकर हर वर्ष दीपावली मनाते आये हो, लेकिन बजाय सम्पन्न होने के और ही कंगाल होते आये। अतः परमपिता परमात्मा शिव अब कहते हैं कि बच्चों, घर की सफाई करना या दीपक आदि जलाना तो साधारण सी बात है, परंतु परमपिता परमात्मा शिव कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के बीच के वर्तमान कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर दीपावली का वास्तविक रहस्य समझाते हैं कि हे बच्चों! यदि वास्तव में लक्ष्मी को बुलाना चाहते हो या श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के राज्य की स्थापना करना चाहते हो तो तुम्हें लक्ष्मी के समान दैवी गुण अपने जीवन में धारण करने होंगे। इसी के लिए परमपिता हमें समझाते हैं कि वत्सों! जन्म-जन्म से पाँच विकारों रूपी मैल तुम्हारी आत्मा में चढ़ी हुई है। जब तक तुम बच्चे अपने आत्मा रूपी घर से इन पाँच विकारों रूपी मैल को नहीं निकालते अर्थात् जब तक आत्मा को ज्ञान प्रकाश नहीं मिलता, तब तक श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का राज्य स्थापन नहीं हो सकता और सही अर्थ में दीपावली नहीं हो सकती।

- ब्र. कु. गंगाधर

क्या आपने कभी विचार किया है कि श्री लक्ष्मी के स्वागत के लिए प्रतिवर्ष दीपमाला जलाकर भी भारतवर्ष क्यों दरिद्र हो गया है? जगमगाते दीपों को देखकर भी श्री लक्ष्मी क्यों हमसे रूठ गई हैं? जलते हुए दीप उनको आकर्षित क्यों नहीं कर पाते हैं? वो कौन सा दीप जलता हुआ देखना चाहती हैं? वस्तुतः आत्मा ही सच्चा दीपक है। विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। मनुष्य की अंतरात्मा तमसाच्छन्न है। ऐसे विकारी मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन कैसे हो सकता है! लेकिन कितनी विडम्बना है कि आत्मदीप प्रज्वलित कर कमल पुष्प सदृश्य अनासक्त बन, कमलासनी श्री लक्ष्मी का आह्वान करने की जगह हम मिट्टी के दीप जलाकर बच्चों का खेल खेलते हैं। मन-मंदिर की सफाई करने की जगह बाह्य सफाई से ही हम खुश हो जाते हैं। तभी तो आज श्री लक्ष्मी हमसे रूठ गयी है। कमल सदृश्य बनकर हम कमला को प्राप्त कर सकते हैं। जैसे बाह्य सफाई के लिए झाड़ू लगाते हैं, मकानों को पेंट या चूना लगाकर व्हाइट करते हैं, ठीक वैसे ही हमारे मन में किसी के प्रति नकारात्मक भाव या भावना है तो उनके प्रति शुभ भावना रखकर मन को साफ करना है। सारे वर्ष में किसी के प्रति नाराज़गी, झगड़ा या मनमुटाव हो गया है तो उसे दीवाली के पूर्व, आज से ही उसे क्षमा कर, उस नेगेटिव भावना को समाप्त कर देना है। इससे न सिर्फ उनको सुकुन मिलेगा बल्कि स्वयं भी हल्का महसूस करेंगे। हमारे मन में लगे हुए नकारात्मक जाले हमें ही हमेशा परेशान किये हुए रहते हैं। उन्हें साफ करना अत्यावश्यक है। और मन रूपी दर्पण में हरेक के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखनी है। तभी तो हमारे जीवन में शुभ के साथ लाभ भी होगा। सिर्फ शुभ-लाभ लिख देने से कुछ नहीं होगा। क्योंकि परमात्मा को साफ हृदय चाहिए, साफ मन चाहिए। कहावत है ना कि नारद को कहा कि आप अपना मुहं आइने में देखो कैसा है, लक्ष्मी को वरने लायक हैं ? लेकिन यहाँ मन रूपी मुख की बात कही गयी है, ना कि साकार मुख की बात। कहते हैं जिस हृदय में पवित्रता होगी, वहाँ सुख, शांति और समृद्धि परछाई की तरह उनके साथ-साथ रहेगी। यहाँ परमात्मा मन को साफ करने की विधि बताते हैं कहते हैं कि हे आत्माओं, तुम मेरे बच्चे बनो, मैं जो ज्ञान देता हूँ उसे धारण करो और मेरे समान बन कर्म करो। जैसे मैं सबको सुख देता हूँ वैसे आपको भी सुखदेव बनकर सबको सुख देना है।

तो दीपावली मनाने के लिए और लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिए हमें मन को साफ-सुथरा और बुद्धि को श्रेष्ठ बनाने की ज़रूरत है। जब मन की सफाई होगी तो बाहर की सफाई तो स्वतः हो जायेगी। तो जीवन में कमला को प्राप्त करने के लिए कमल आसन, कमल फूल समान जीवन जीकर ही लक्ष्मी को पा सकते हैं। तो इस तरह से सभी दीवाली मनायेंगे ना!

ज्ञान का सिमरण कर सिमर-सिमर सुख पाओ

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

जो भी मुरली की प्वाइन्ट्स पढ़ी हैं या सुनी, फिर उसे सिमरण में लावें तो समय सफल होता है। ज्ञान सिर्फ सुनने या सुनाने के लिए नहीं है, पर वह हमारे मन, कर्मेन्द्रियों द्वारा यूज़ होता है।

सभी मिलकर बोलो मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा, शुक्रिया बाबा। अभी मुझे खुली दिल से जो कुछ कहना है मैं कह दूँगी। मैं देखती हूँ आप सभी अपनी खुशी से, बाबा की शक्ति से और ईश्वरीय परिवार के प्यार से अच्छी जीवन बना रहे हो, क्योंकि दिल खुश, बाबा खुश।

आप जो कुछ करते हो प्रैक्टिकल लाइफ में, भगवान का साथ मिलता है। साथ मिलने से फिर ड्रामा में जो पार्ट है वह साक्षी होकर प्ले करता है। यह क्यों, क्या, कैसे, असुल अन्दर से आवाज़ न निकले। हमारी वृत्ति, दृष्टि से सब ठीक हो जायेगा, देरी नहीं लगेगी।

जो मैंने लेटेस्ट बात सुनाई है - पवित्रता, सत्यता, धैर्यता। कई भाई-बहनों में थोड़ा धीरज की कमी है क्योंकि सत्यता की शक्ति जमा नहीं है। नम्रता का गुण भी बहुत अच्छा है, देह अभिमान खत्म कर देता है। कुछ भी हो जाए तो भी मधुरता साथ रहे, मीठी वाणी बोल, मिठरा मीठी वाणी बोल। कभी अलबेलापन या थकावट ना रहे, बाबा करा रहा है, शक्ति दे रहा है।

समय भी सिखा रहा है। मुझे यह पता थोड़े ही था कि मैं भी कोई दादी बनेंगी, या मैं दादी बनूँ, ज़रा भी कोई ख्याल नहीं था। मुझे दादी बनने का भी संकल्प नहीं था परन्तु दादी का महत्व बाबा-मम्मा समान हो। जैसे मम्मा-बाबा, जैसा कर्म मैं करूँगी, मुझे देख और करें। कर्म पर बहुत ध्यान। मुख पर, कानों पर, दृष्टि पर, वृत्ति, स्मृति पर सदा ध्यान रहे।

दृष्टि का आधार है पहले वृत्ति। वृत्ति में वही बात रहती है, जो स्मृति में होती है। तो स्मृति में सदा रहना, सिमर-सिमर सुख पाओ, कलह कलेश मिटाओ। ज्ञान का सिमरण बहुत अच्छा है। जो भी मुरली की प्वाइन्ट्स पढ़ी हैं या सुनी, फिर उसे सिमरण में लावें तो समय सफल होता है। ज्ञान सिर्फ सुनने या सुनाने के लिए नहीं है, पर वह हमारे मन, कर्मेन्द्रियों द्वारा यूज़ होता है। कोई स्वभाव के वश न हो। बुद्धि शुद्ध, शान्त रहे।

सेवा अर्थ या कोई भी अच्छे कार्य अर्थ संकल्प कोई आवे तो वो साकार हो जाए, हो जायेगा। कभी होगा, क्या होगा? कोई मदद नहीं करता...ऐसी भाषा न हो। बाबा ने इतना ज्ञान धन दिया है। ज्ञान धन भी है, ज्ञान खुराक भी है। जो बाबा ने किया है, कराया है, वही करना है।

अभी माया को गुडबाय करो तो नो प्रॉब्लम

सभी के मन में अभी भी कौन याद है? बापदादा, क्योंकि मेरा बाबा है ना। तो मेरी चीज़ तो भूलने वाली है ही नहीं। भूल सकती हैं? कभी-कभी भूल जाता है! बाबा से तो बहुत प्यार है, तो उसे दिल में बिठाया है ना। जो बात दिल में बैठ जाती है वो तो भूल हीं नहीं सकती और बाबा दिल में बैठा है तो आप कम्बाइण्ड हो गये। हमारा कम्बाइण्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी है, तो कभी भी कोई तकलीफ होती है तो जो नज़दीक होता है, उसको याद किया जाता है। तो आप क्या करते हो? जब अकेले होते हो तो माया आ जाती है, माना आप अपने को अकेला समझते हो। तो अभी माया को गुडबाय करो तो नो प्रॉब्लम। बाबा चाहता ही यह है कि हमारा एक-एक बच्चा सदा हर्षित चित्त, मायाजीत हो। तो अभी यहाँ मधुबन में कम्बाइण्ड रूप की ट्रायल करना। तो नो प्रॉब्लम। आज अगर प्रॉब्लम को विदाई दे दी तो बाबा खुश हो रहा है, दिखाई दे रहा है बाबा का मुस्कुराता हुआ चेहरा। जैसे अभी सभी का चेहरा बहुत अच्छा लग रहा है, सदा ऐसे ही रहें, तब कहेंगे मायाजीत। बाबा ने एक सेकण्ड में इस दृश्य का फोटो निकाल लिया, आप भी अपने दिव्य दृष्टि में यह फोटो खींच लो। आपको सदा खुशी मिल गयी।

बाबा सदा साथ है माना सदा खुशी आपके साथ है। तो कभी कुछ बात हो जाये, तब इस साथ को याद करो, तो यह साथी साथ देगा माना सहयोग देगा लेकिन साथ नहीं छोड़ना। यह सहज है ना! अब पत्र नहीं लिखना बाबा यह है, बाबा यह है। दिल में ही बाबा बैठा है तो दिल से बाबा बोलो तो बाबा सेवा के लिए सदा हाज़िर हो जायेगा। अभी करना क्या है? अभी यही खुशी का, सुख का वायुमण्डल फैलाओ क्योंकि दुनिया में दुःख बहुत बढ़ रहा है। लेकिन हैं तो हमारे भाई ही ना, तो जो दुःखी हैं उन्हों को सुख के वायब्रेशन दो। आपको कोई भी देखे, कितना भी मुरझाया हुआ हो, आपको देख करके मुस्कुराने लगे। अब ऐसी सेवा करके दुनिया को परिवर्तन करना है। इसके लिए मैं अपना फेस, अपनी चलन, अपना बोल जो भी है वो ऐसा करूँ जो हमको देख के दूसरे भी खुश हो जायें। तो यह सर्विस करनी आती है? योग में बैठ के सकाश देना यह आता है ना? सारी दुनिया आपके लिए, सकाश लेने के लिए तरसती हैं। क्योंकि दुःख तो बढ़ ही रहा है देखते हैं और सुख चाहते सभी हैं तो आप द्वारा वो सुख और शांति की जो सकाश जायेगी ना, तो दुनिया परिवर्तन हो जायेगी। तो अभी ऐसी सेवा करेंगे ना, ऐसे नहीं जो टीचर्स हैं वहीं इस सेवा के निमित्त हैं, हम एक-एक सेवा के लिए निमित्त हैं। अब मन को चेक करो और मन को बिजी रखो।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

आपको कोई भी देखे, कितना भी मुरझाया हुआ हो, आपको देख करके मुस्कुराने लगे। अब ऐसी सेवा करके दुनिया को परिवर्तन करना है।

प्यासी आत्माओं को सकाश देने के लिए साइलेन्स की शक्ति जमा करो

बाबा हम बच्चों को किस निगाह से देखते हैं कि बच्चे इस देह से, इस पुरानी दुनिया से, इन 5 तत्वों से भी पार हो साइलेन्स में बैठे हैं। साइलेन्स एक बड़ी पॉवर है, इसमें सर्व शक्तियाँ समाई हुई हैं। जैसे साइन्स वालों ने साइन्स पावर से शक्तिशाली वस्तुएं बनाई हैं - एटम बम आदि। तो हम ऑलमाइटी अथॉरिटी अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न परमधाम निवासी हैं। हम आत्मायें पार्टधारी हैं, पार्ट बजाकर अपने घर चले जाने की तैयारी कर रहे हैं। वह आया है पण्डा बनकर हमको साथ ले जाने के लिए। सर्व सम्बन्धों से मुक्त कराकर अपने साथ कनेक्शन भी जुड़ाया है क्योंकि अब घर वापिस जाना है। तो अब यहाँ बैठे भी उस साइलेन्स का अनुभव करना है। जब वहाँ चले जायेंगे तब उस साइलेन्स का अनुभव वर्णन नहीं कर सकेंगे। तो अब शान्ति का अनुभव भी बाप इसी जीवन में कराते हैं।

जितना-जितना हम मन-बुद्धि को 5 तत्वों से पार ले जायेंगे तो जो स्वीट साइलेन्स होम है, वहाँ जाकर निवास करेंगे और लाइट-माइट का अनुभव करेंगे। जैसे सितारे आकाश तत्व के अन्दर अपने-अपने स्थान पर चमकते रहते हैं, वैसे हम भी ब्रह्म तत्व में जाकर बाप के साथ उस साइलेन्स की शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। बाप को इन आंखों से नहीं देख सकते हैं लेकिन उसके कर्तव्य द्वारा, उनके गुणों द्वारा, शक्तियों द्वारा उसका अनुभव होता है। तो जितना हम उसमें स्थित रहेंगे, उतना ही हम उस साइलेन्स पॉवर का अनुभव करेंगे।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

जितना - जितना हम मन-बुद्धि को 5 तत्वों से पार ले जायेंगे तो जो स्वीट साइलेन्स होम है, वहाँ जाकर निवास करेंगे और लाइट-माइट का अनुभव करेंगे।

उस याद से हमारे अनेक जन्म के विकर्म विनाश होते हैं। और मन के संकल्प-विकल्प भी मर्ज हो जाते हैं। मास्टर ऑलमाइटी की स्टेज का अनुभव होता है। जितना-जितना अभ्यास करते जायेंगे उतना बेहद विश्व की सेवा कर सकेंगे। जो वाचा द्वारा हम सर्विस नहीं कर पाते, वह हम समर्थ संकल्प द्वारा, दूर वाली आत्माओं की सेवा कर सकते हैं। बाबा कहते हैं आपके बहुत भक्त हैं, जो आपका आह्वान कर रहे हैं, प्यासे हैं। तो वे हमारी झलक को कब देख सकते हैं? जब हम एकाग्र अवस्था में रहेंगे। हमारा संकल्प उतना चले जो समर्थ हो, व्यर्थ न आवे। वाचा भी उतनी ही चले जो समर्थ हो, सेवा अर्थ हो, व्यर्थ न जावे। ऐसा गुप्त पुरुषार्थ चाहिए। बुद्धियोग की लाइन क्लीयर हो, बुद्धि पवित्र हो तो बाप की प्रेरणाओं को, बाप की पॉवर को कैच कर सकते हैं। जब हम देह से निकल बाप को याद करते हैं तो बुद्धियोग जुट जाता है। तब ही बाप से हम सर्वशक्तियों का अनुभव कर सकते हैं। जब हम इन पांच तत्वों से पार हो जाते हैं, पृथ्वी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, तभी हम रीयल शान्ति का अनुभव कर सकते हैं। हम दुनिया की निगाहों से दूर, आवाज़ से परे परम शान्ति का अनुभव करते हैं, तो आवाज़ में आना पसन्द नहीं आता। हम सिर्फ पार्ट बजाने के लिए कर्मेन्द्रियों का आधार लेकर आते हैं - ऐसा अनुभव होगा।